Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487 editor@aijmr.com
Volume 2, Issue 2, March-April 2024
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2024.v02i02.1151

मेवाड़ राज्य का भौगोलिक एवं ऐतिहासिक परिचय

आशा सुनारीवाल

सह आचार्य इतिहास
राजकीय महाविद्यालय सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) राज.
राजकीय कन्या महाविद्यालय चाकसू, (जयपुर) (कार्यव्यवस्थार्थ)

शोध सारांश:
राजस्थान के दक्षिणी भाग में स्थित मेवाड़ राज्य भारतीय इतिहास का एक गौरवशाली क्षेत्र रहा है। इसका भौगोलिक क्षेत्र आज के उदयपुर, सलूम्बर, चित्तौड़गढ़, राजसमंद, भीलवाड़ा और डूंगरपुर–बांसवाड़ा जिलों के कुछ हिस्सों में फैला हुआ है। अरावली पर्वतमाला की ऊँचाईयों और झीलों से घिरा यह क्षेत्र प्राकृतिक सौंदर्य और वीरता दोनों का प्रतीक है।
मेवाड़ का भौगोलिक स्वरूप विविधतापूर्ण हैकृयहाँ पहाड़, झीलें, घाटियाँ, वन क्षेत्र और उपजाऊ मैदानी भाग सब एक साथ दिखाई देते हैं। जलवायु सामान्यतः शुष्क है, लेकिन उदयपुर, सलूम्बर, डूंगरपुर एवं बांसवाड़ा के आसपास का इलाका झीलों के कारण अपेक्षाकृत नम रहता है। इसीलिए उदयपुर को "झीलों की नगरी" कहा जाता है।
"हिंदुआ सूरज" उपनाम से प्रसिद्ध रहे भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी–पश्चिमी भाग में स्थित राजस्थान का दक्षिणी–पश्चिमी भू–भाग अर्थात् मेवाड़ राज्य विभिन्न नामों से प्रसिद्ध रहा है। द्वितीय शताब्दी ई. पू. में ये क्षेत्र 'शिबि' जनपद के नाम से प्रसिद्ध था तो बाद में 'प्राग्वाट' कहलाया । संस्कृत शिलालेखों एवं ग्रन्थों में यह 'मेरों का देश' अर्थात् 'मेदपाट' नामकरण से भी सम्बोधित किया गया है।

मुख्य शब्द: भारतीय इतिहास, मेवाड़, बलिदान, झीलों की नगरी, हस्तशिल्प, पधारो म्हारे देश

मेवाड़ का ऐतिहासिक परिचय
मेवाड़ का इतिहास वीरता, बलिदान और स्वाभिमान से भरा हुआ है। इस क्षेत्र पर शासन करने वाले सिसोदिया वंश ने सदैव स्वतंत्रता और संस्कृति की रक्षा की। मेवाड़ की राजधानी चित्तौड़गढ़ रही, जो भारत के इतिहास में तीन महान जौहरों और अनगिनत युद्धों का साक्षी है। महाराणा हम्मीर, महाराणा कुम्भा, महाराणा सांगा, और महाराणा प्रताप जैसे वीर शासकों ने यहाँ के इतिहास को अमर बना दिया। अकबर के समय में महाराणा प्रताप और हल्दीघाटी का युद्ध (1576 ई.) मेवाड़ की वीरता की अमर गाथा है। बाद में महाराणा उदयसिंह ने चित्तौड़ के नष्ट होने के बाद उदयपुर नगर की स्थापना की, जो आगे चलकर मेवाड़ की नई राजधानी बनी।
गुहिलोत सिसोदिया शासकों का उदयपुर राज्य या मेदपाट मेवाड़ राज्य राजस्थान में विलीनीकरण से पूर्व राजस्थान के दक्षिण में 23^0 49′ से 25^0 28′ उत्तर अक्षांश तथा 73^0 1′ से 75^0 49′ पूर्व देशान्तर के मध्य में स्थित है। भारतीय संघ में विलिनीकरण से पूर्व इसका क्षेत्रफल 12691 वर्गमील था। आधुनिक ऐतिहासिक काल में इस राज्य के उत्तर में अजमेर– मेरवाड़ा, पश्चिम में जोधपुर और सिरोही, दक्षिण पश्चिम में गुजरात का ईडर, दक्षिण में डूंगरपुर, बाँसवाड़ा और प्रतापगढ़, पूर्व में बूंदी व कोटा तथा मध्यप्रदेश का नीमच क्षेत्र सम्मिलित है। उत्तर–पूर्व में देवली की छावनी के पास जयपुर का क्षेत्र है। मेवाड़ राज्य के मध्य में स्थित ग्वालियर का परगना गंगापुर जिसमें दस गाँव थे तथा आगे पूर्व में इन्दौर का परगना नंदवाय या नंदवास आ गया था जिसमें 29 गाँव थे।
अरावली की प्राकृतिक सुरक्षा और भूतलीय संरचना – मेवाड़ भू–क्षेत्र के पश्चिमी – दक्षिणी एवं पूर्वी भागों मेंविश्व की प्राचीनतम पर्वत माला अरावली पर्वत श्रेणियां फैली हुई हैं जिन्होंने पश्चिम, दक्षिण और पूर्व दिशाओं की ओर से राजस्थान व भारत के अन्य भू–प्रभागों से मेवाड़ को नैसर्गिक रूप से अलग करते हुए इन दिशाओं में मेवाइराज्य की प्राकृतिक सीमाओं का निर्माण करती है जिन्होंने मेवाड़ के लिए एक प्रकार से सुरक्षा कवच का कार्य किया है। मेवाड़ के दक्षिणी विभाग से आगे डूंगरपुर राज्य तक फैली अरावली पर्वत श्रेणियों के बीच बहने वाली सोम व माही नदियाँ

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487 editor@aijmr.com
Volume 2, Issue 2, March-April 2024
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2024.v02i02.1151

मेवाड़ व डूंगरपुर और मेवाड़ व बाँसवाड़ा के मध्य विभाजन रेखा के रूप में दक्षिण में मेवाड़ की प्राकृतिक सीमा बनाती है। मेवाड़ की उत्तरी प्राकृतिक सीमा के सन्दर्भ में उल्लेखनीय हैं कि मेवाड़ के उत्तर में बहने वाली खारी नदी इस राज्य को अजमेर–मेरवाड़ा से अलग करती हैं। भूगर्भशास्त्रियों के अनुसार मेवाड़ को प्राकृतिक सुरक्षा प्रदान करने वाली अरावली पर्वतमाला का उदय आर्चएइन में हुआ है जी कि मेसोजोकि काल में ऊँची हुई । अरावली पर्वतमाला में कुछ परिवर्तन पेलिओजोअिक काल में भी हुए। अतः इस पर्वतमाला का निर्माण काल वर्तमान से 10 लाख वर्ष पूर्व से एक खरब वर्ष पूर्व तक माना जा सकता है। निम्बाहेड़ा परगने के समीप मालवा का पठार भी मेवाड़ को अद्भुत भौगोलिक सौन्दर्य प्रदान करता हैं।

मेवाड़ का भू–भाग अधिकांशतः भूतल पहाड़ी है जिसकी स्थलाकृति (टोपोग्राफी) पर्वत श्रेणियों सहितदर्रे, वन–उपवन, पठार, मैदान, तालाब, नदियाँ, नाले, झीलें आदि विद्यमान रहे हैं। इसके पश्चिमी भाग में उत्तर से दक्षिण तक अरावली पर्वत की श्रृंखला फैली हुई है जो कि उत्तर (उत्तर–पूर्व) में अजमेर व मेरवाड़े में होती हुई दिवेर के करीब मेवाड़ में प्रवेश करती हैं जहाँ इनकी उँचाई और चौड़ाई कम है किन्तु दक्षिण–पश्चिम में मारवाड़ के किनारे किनारे अरावली पर्वत श्रृंखलाओं की ऊँचाई बढ़ती गई अर्थात् ये पर्वत श्रेणियां वायव्य कोण से लगाकर अधिकाँश पश्चिमी तथा दक्षिणी हिस्से में फैल गई हैं। कुम्भलगढ़ के निकट इनकी ऊँचाई 3568 फुट तक है, वहीं गोगुन्दा से 22 किलोमीटर उत्तर में स्थित इस क्षेत्र के सबसे ऊँचे पर्वत शिखर जर्गा पहाड़ी की ऊँचाई 4315 फुट है एवं इसकी (जर्गा) चोटी समुद्रतल से 1223 मीटर ऊँची है। ऊँचाई के बराबर ही दक्षिण की ओर बढ़ते हुए इन पर्वत श्रृंखलाओं एवं उनसे सम्बद्ध पहाड़ियों का चौड़ाई में भी विस्तार होता गया है। जर्गा और राहंग के मध्य भूमि में आम के पेड़ है और यहाँ चाँवल, गेहूँ, चना, उड़द की पैदावार अधिक होती हैं। मछावला और जर्गा के बीच की भूमि पहाड़ कुहाड़िया नला कहलाती है जो 32 किलोमीटर लम्बी है। जर्गा का पहाड़ कुहाड़िये नाले से दाहिनी ओर है। जर्गा पर्वत पर जल उपलब्धता प्रकृति प्रदत्त रही। कुम्भलगढ़ तथा केलवाड़ा के पास अरावली पर्वत श्रेणियां राज्य के मध्य भाग की ओर करीब 17–18 किलोमीटर तथा गोगुन्दा के भाग में 29 – 30 किलोमीटर अन्दर की ओर फैल गई है। ये पर्वत श्रृंखलाएँ राज्य के उत्तर–पश्चिमी से लगाकर सारे पश्चिमी तथा दक्षिणी हिस्से में फैल गई है। उत्तर में खारी नदी से लगाकर चित्तौड़ से कुछ दक्षिण तक और चित्तौड़ से देबारी तक एक समान अर्थात् समतल भूमि है। अरावली पर्वत श्रेणी की दूसरी शाखा राज्य के उत्तर–पूर्व में देवली के पास से शुरू होकर भीलवाड़ा तक चली गई है। तीसरी श्रेणी देवली के निकट से निकल कर राज्य के पूर्वी हिस्से जहाजपुर मांडलगढ़, बिजोलिया, भैंसरोड़गढ़ व मेनाल होती हुई चित्तौड़ में दक्षिण तक जा पहुँची है। इस श्रेणी की ऊँचाई 2000 फुट से अधिक नहीं है। देबारी से लेकर राज्य का सारा पश्चिमी भाग पहाड़ियों से भरा पड़ा है। यहाँ की पहाड़ियां घने जंगलों से आच्छादित, जल की बहुतायत से लिए हुई थी। जहाजपुर से ही अरावली पहाड़ियों की श्रेणी विस्तृत और ऊँची होती चली गई है और माँडलगढ़ से आगे जाकर उसके ऊपर एक समान समतल भूमि आ गई है जिससे इसको 'ऊपरमाल' कहते हैं। यह उपजाऊ भूमि है (उपजाऊ पठार) तथा यहाँ जल की प्रचुरता है। बिजोलियाँ का पठारी अंचल कृषि दृष्टि से उपजाऊ क्षेत्र रहा हैं।

रूपजी के निकट स्थित पर्वत या अरावली पर्वत मेवाड़ राज्य के सीमा पर हैं। जीलवाड़ा और रीछेड़ के मध्य आमलमाल या अमजमाल का बड़ा पर्वत 5 कोस. या 16 कि.मी. लम्बा है। इसके इधर केलवा है। बाघोरी के आगे घाटा नामक गाँव है। उसके आगे भोरड का मगरा उत्तर–दक्षिण की ओर 16 कि.मी. लम्बा है। भोरड़ और मछावला के बीच समीचा गाँव उदयपुर से 54 कि.मी. रूपजी से 36 कि.मी. और कुम्भलमेर से 32 कि.मी. दूरी पर है। उसके आगे मछावला का मगरा 22 कि.मी. लम्बा है। इसके आस–पास 9 गाँव बसते हैं। इस पर्वत पर सघन वृक्षावली व जल की प्रचुरता थी। उसके आगे बरवाड़ा जहाँ से बर और बनास नदियों निकलती है। इसके आगे 3 कि.मी. लम्बा घासेर का पहाड़ है तथा इसके आगे नीचे पिण्डर झांप पर्वत है। सेवाड़ी गाँव कुंभलगढ़ से 22 कि.मी. दूर हैं। इससे राहंग का मगरा बहुत ही विकट है, जहाँ जल की अधिकता थी और 25 गाँव इसके आस–पास थे। यह पर्वत 51 कि.मी. लम्बा 51 कि.मी. चौड़ा और उसका घेरा 102 कि.मी. का है। कठिनाई के समय मेवाड़ के शासकों के लिए ठहरने का सुरक्षित समुचित स्थान है। बेकरिया के घाटे से जूही नदी निकलती है। बाँसवाड़ा व देवलिया प्रतापगढ़ के बीच मेवाड़ के श्छप्पनश के गाँव जाना और जगनेर हैं। देवलिया और मेवल के बीच के क्षेत्र को मण्डल का देश कहते हैं जिसमें मुख्य स्थान धरियावद है लेकिन बम्बोरा भी सम्मिलित हैं। यहाँ का पानी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक माना जाता है। बड़वाल परगने का गाँव धरियावद जहाँ बड़े पहाड़ और सघन वृक्ष है। देवलिया का मेरवाड़ा भी निकट स्थित हैं। धरियावद के पश्चिम में मेवल के मगरे हैं तथा बाठरड़ा और सलूम्बर के मध्य बड़े–बड़े

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487 editor@aijmr.com
Volume 2, Issue 2, March-April 2024
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2024.v02i02.1151

पहाड़ है। चीरवा से 7 कि.मी. और उदयपुर से 16 कि.मी. पर एकलिंग जी और वहाँ से 3 कि.मी. राठासण की पहाड़ी 6 कि.मी. के घेरे में है वहाँ जल नही था। मेवाड़ भू–क्षेत्र के पश्चिमी पहाड़ी भाग में दक्षिण–पश्चिमी भाग श्भोमटश (कोटड़ा और खेरवाड़ा तहसील) कहलाता हैं जिसमें सिरोही, पालनपुर और ईडर के इलाकों तक का मेवाड़ का पहाड़ी भू–क्षेत्र भोमट के जिलेय के रूप में प्रसिद्ध रहा हैं। भोमट के ऊपर की तरफ स्थित विशेष पहाड़ी मैदानी क्षेत्र शगिर्वाश कहलाता है अर्थात् उदयपुर व उसका निकटवर्ती भू–भाग अंदरूनी गिरिवा जो चारों ओर से पहाड़ियों से घिरा हुआ है, यह भीतरी गिर्वा है और इसमें बाहर का समतल भाग बेरूनी गिरिवा या बाहरी गिर्वा कहलाता है। मेवाड़ राज्य के पूर्वी विभाग में उपजाऊ समतल क्षेत्र हैं किन्तु दक्षिणी और पश्चिमी विभाग में घने जंगलों से भरी पहाड़ियां आ गई है जिनके मध्य में स्थान–स्थान पर कृषि योग्य भूमि है। दक्षिण में डूंगरपुर की सीमा से लेकर पश्चिम में सिरोही की सीमा तक सारा प्रदेश पहाड़ी होने से श्मगराश कहलाता हैं जबकि पूर्वी भाग छप्पन कहलाता है। अनुमानतः मेवाड़ राज्य का करीब दो तिहाई भाग समतल है और शेष पहाड़ी एवं पर्वतीय। जनमानस के अनुसार 56 नदी–नालों के प्रवाह क्षेत्र या 56 गाँवों के समूह के कारण ये क्षेत्र छप्पन कहलाया । मुहनोत नैणसी के अनुसार चावंड, सेमारी, सलुम्बर और झाडोल के ताल्लुक में 56–56 गाँवों के समूह रहे।

नाल:

मेवाड़ के पर्वतीय क्षेत्रों में से निकलने वाले तंग रास्तोंया घाटियों या दरों को स्थानीय भाषा में नाल कहते हैं। युद्ध के अवसर पर सैनिक आवागमन एवं व्यापार–वाणिज्य की –दृ ष्टि से पर्वतीय क्षेत्रोंमें अवस्थित इन नालों का रास्तों के रूप में उपयोग किया जाता था। वहीं वर्षा काल में इन पर्वतों व नाल के नीचे की सतही भूमि पर जल एकत्र हो जाता था जिसका उपयोग पशु–पक्षियों, राहगीरों के साथ साथ भूमिगत जल को बढ़ाने में सहायक होता था। 'जीलवाड़ा की नाल' अर्थात् पगल्या नाल, सोमेश्वर की नाल या देसूरी की नाल, हाथी गुड़ा की नाल इत्यादि उल्लेखनीय हैं। देबारी की घाटी, केवड़ा की नाल, भाखर (पर्वत) की नाल, खमनोर का घाटा, सायरे का घाटा आदि मेवाड़ राज्य के भौगोलिक वैशिष्ट्य के भाग हैं। वन–सम्पदा धरातलीय संरचना ने मेवाड़ को विभिन्न प्राकृतिकवन संपदाओं के भण्डार भी दिये हैं। बांस और छोटे–छोटे वृक्षों से ढकी अरावली पर्वतीय क्षेत्र की व्यापकता मेवाड़ की विविधतायुक्त विशाल वन सम्पदा की प्रतीक है, जहाँ की घाटियों में महुवा व आम का बाहुल्य रहा, तो वनों मेंसालर, मौरवा, सेमल, गूगल, आम, इमली, महुआ, सागवान, धामण (फालसा) टीमरू (आबनूस) पीपल, चंदन, नीम, सीसम, खैर, गूलर, जामून, खजूर, खेजड़ा, बबूल, खँजडा, आँवला, बेहड़ा द्यौ, हलदू, हिंगोटा, कचनार, कालियासिरस (शिरिष) कड़ाया, आदि वृक्ष अत्यधिक पाये जाते है। बांसों के विशाल जंगलों के अतिरिक्त बांसी व धरियावद के जंगलों में कीमती ईमारती लकड़ी सागवान के असंख्य पेड़ उपलब्ध होते हैं। पशुओं के लिए घास, कई प्रकार की जड़ी बूटियां एवं गोंद, बेहड़ा, लाख, महुआ, आम, जामून आदि है, घने जंगलों का उत्पादन आदिवासियों की आजीविका का साधन रहा है। यहाँ घने वनों के कारण वर्षाकालीन जल रूकने से भूमिगत जल स्तर में भी वृद्धि हुई है। स्थानीय जनश्रुति के अनुसार चित्तौड़ दुर्ग के सीताफल ऐतिहासिक काल से प्रसिद्ध रहे हैं। बाठेड़ा क्षेत्र में अफीम, भांग व कंसुबा भी बोया जाता था। इस प्रकार मेवाड़ वन्य सम्पदा दृष्टिकोण से हरा–भरा क्षेत्र रहा हैं।

पशु–पक्षी एवं जल–जन्तु:

मेवाड़ वन्य क्षेत्र में जंगल की बहुतायत के कारण यहाँ सभी प्रकार के वन्य जीवों का अस्तित्व रहा एवं जैव–विविधता के प्रतीक रहे जंगली जानवरों में शेर सुनहरी नाहर, जंगली सूअर, अधबेसरा (बघेरा), टीमर्या, चौफुल्या, चीता (पेंथर), भेड़िया, बंदर, रीछ, सांभर, नीलगाय (रोझ), चीतल, हिरण, जंगली कुत्तो, वन–विलाव, लोमड़ी, गीदड़ (सिंयार), लकड़ भग्गा (जरख) खरगोश आदि प्रमुख रूप से पाये जाते रहे। इनमें से कुछ आदिवासियों व गरीब जनसामान्य के जीवनयापन हेतु खाद्य पदार्थ के रूप में प्रयुक्त होते थे।

विविध प्रकार के जंगली पक्षियों में गिद्ध, चील, शिकरा, बाज, मोर, तोता, कोयल, कौआ, जंगली मुर्ग, तीतर, कबूतर, बटेर, हरियल आदि मेवाड़ में पर्याप्त थे। जल जन्तुओं में मगरमच्छ, कछुए, विभिन्न प्रकार की मछलियां, केंकड़े, जलमानस आदि झीलों व नदियों में पाये जाते थे। जल स्रोतों के करीब रहते हुए भोजन के लिए जलीय जंतुओं पर निर्भर रहने वाले पक्षियों में ढींच, सारस, बगुला, हंजा, घरट, टिरहरी, बतख, जलमुर्ग आदि विशेष उल्लेखनीय थे।

पर्यावरण संतुलन बनाये रखने में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले ये वन्य जीव घने जंगलों में निचले हिस्से की तरफ भरे रहने वाले जल का उपयोग करते थे।

नदियां:
मेवाड़ की अधिकांश नदियां मेवाड़ भू–क्षेत्र के पश्चिमी भाग में स्थित अरावली या आड़ावला पर्वत श्रेणियों से निकलती है जिनमें बनास (कुम्भलगढ़ के निकट उद्‌गम), कोठारी (कोटेसरी), खारी (दिवेर की पहाड़ियों से उद्‌गम), मानसी, बेड़च (आयड), बागन, वाकल, सोम, जाखम आदि प्रमुख है। मेवाड़ में कई नदियां है किन्तु इनमें वर्ष भर बहने वाली एक भी नदी नहीं है, किन्तु चम्बल नदी वर्ष भर प्रवाहित होने वाली इस क्षेत्र की एकमात्र नदी है जो कि मेवाड़ में भैंसरोड़गढ़ के समीप 9मील (14–15 कि.मी.) तक बहती है। लेकिन उगम व प्रवाह क्षेत्र के दृष्टिकोण से चम्बल को वास्तव में मेवाड़ की नदी नहीं कहा जा सकता हैं। इन नदियों का प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक महत्व रहा है जिन्होंने मेवाड़ के नगरीकरण में आधारभूत भूमिका निभाई। खारी, सोम आदि नदियों ने जहाँ प्राकृतिक सीमाओं का निर्धारण किया वहीं बेड़च, बनास, आहड़ आदि नदियों ने प्रागैतिहासिक काल से लेकर ऐतिहासिक काल के विभिन्न युगों में मानव सभ्यता एवं भारतीय संस्कृति के विकास में पुरातात्विक स्मारकों के निर्माण में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

झीलें और तालाब:
मेवाड़ भू–क्षेत्र में यहाँ की भौगोलिक परिस्थितियों ने कृत्रिम झीलों के निर्माण में योगदान दिया है। सन् 225 के नांदसायूप (स्तंभ) लेख में एक विशाल तालाब का जिक्र है। मेवाड़ भू–क्षेत्र में प्राकृतिक झील नहीं है लेकिन मध्यकाल से वर्तमानकाल तक कई झीलें यहाँ के गुहिलोत शासकों द्वारा बनवाई गई जिनमें पीछोला, उदयसागर, राजसमुद्र, जयसमुद्र, फतहसागर, बड़ी का तालाब, गंभीरी बांध, मेजा बाँध, राणा प्रताप सागर बाँध आदि विशेष उल्लेखनीय है। स्थापत्य स्मारक एवं जल स्थापत्य स्मारक की दृष्टि से इन झीलों का अभूतपूर्वक योगदान रहा है। मेवाड़ रियासत के तालाबों में घासा, सेंसरा, कपासन, मांडल, गुरलां, भटेवर आदि के तालाव उल्लेखनीय रहे।

जलवायु:
मेवाड़ के धरातलीय स्तर के ऊँचे होने से यहाँ उष्णकाल में न तो अधिक गर्मी पड़ती है और न शीत ऋतु में अधिक सर्दी ही, इस प्रकार यहाँ के भू–भाग का जलवायु प्रायरू समशीतोष्ण रहा। यहाँ सघन जंगलों एवं वृक्षों की बहुतायत से ठण्डी एवं गरम हवाओं, लहरों, वायु, बवण्डरों आदि का दौर– दौरा भी न के बराबर रहा है। यहाँ का जलवायु आरोग्यप्रद माना जाता है। किन्तु पहाड़ी क्षेत्र के जल में खनिज पदार्थ व वनस्पति के मिश्रण से भारीपन आ जाता है। यहाँ पर वर्षाकाल जून माह के मध्य से सितम्बर माह के मध्य तक का है जिसे श्चातुर्मासश अर्थात वर्षा के चार महीने के नाम से जाना जाता है। वर्षा का वार्षिक औसत 66 से.मी. से 95 से.मी. तक रहता था। अतः सघन वृक्षावली एवं घने जंगलों के कारण वर्षा का औसत अधिक रहता था परन्तु वर्तमान में वृक्षों के कट जाने व जंगलों के साफ हो जाने तथा उद्योगों के प्रदूषित प्रभाव ने मेवाड़ राज्य से सम्बद्ध भू–क्षेत्र के जलवायु व पर्यावरण संतुलन को बिगाड़ दिया है जिससे सर्दी–गर्मी का प्रभाव तो बढ़ा ही है किन्तु साथ ही वर्षा के औसत में भी कमी आई है।

मेवाड़ के प्रमुख पर्यटन स्थल:
मेवाड़ अपने प्राकृतिक सौंदर्य, ऐतिहासिक दुर्गों, मंदिरों और झीलों के कारण विश्वभर में प्रसिद्ध है। यहाँ के प्रमुख पर्यटन स्थल निम्नलिखित हैं —

1. चित्तौड़गढ़ किला – भारत का सबसे बड़ा किला, जिसे यूनेस्को विश्व धरोहर में शामिल किया गया है। यहाँ की विजय स्तंभ, कीर्ति स्तंभ, रानी पद्मिनी महल और मीरा मंदिर प्रसिद्ध हैं।

2. उदयपुर – झीलों का शहर।
पिचोला झील, फतेहसागर झील, सज्जनगढ़ महल (मानसून पैलेस) और सिटी पैलेस पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। यहाँ का बागोर की हवेली और सहेलियों की बाड़ी भी दर्शनीय स्थल हैं।

E-ISSN: 2584-0487 editor@aijmr.com
Volume 2, Issue 2, March-April 2024
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2024.v02i02.1151

3. कुम्भलगढ़ किला – महाराणा कुम्भा द्वारा निर्मित यह किला भी विश्व धरोहर में शामिल है। इसकी दीवारें चीन की दीवार के बाद दुनिया की दूसरी सबसे लंबी दीवार हैं।
4. नाथद्वारा – श्रीनाथजी का प्रसिद्ध वैष्णव तीर्थ, जहाँ लाखों श्रद्धालु प्रतिवर्ष दर्शन के लिए आते हैं।
5. राजसमंद झील और हल्दीघाटी – राजसमंद झील महाराणा राजसिंह द्वारा बनवाई गई थी, जबकि हल्दीघाटी वह स्थान है जहाँ महाराणा प्रताप ने अकबर की सेना से वीरता से युद्ध किया।

मेवाड़ के संदर्भ में मेवाड़ काम्प्लेक्स (मेवाड़ सकुल योजना – गोगुन्दा, चावंड, हल्दीघाटी, दिवेर आदि राणा प्रताप से सम्बंधित स्थल), द ग्रेट अरावली ट्रेन सफारी (उदयपुर, राजसमन्द, कामलीघाट), मेवाड़ – वागड़ धार्मिक सर्किट (मेवाड़ – वागड़ के जनजातीय– धार्मिक केन्द्रों का भ्रमण) आदि उल्लेखनीय हैं। मेवाड़ के चयनित पर्यटन स्थलों (ऐतिहासिक विरासतीय स्मारक और सांस्कृतिक धरोहर) में उदयपुर (सिटी पेलेस, सज्जनगढ़ पेलेस व फतेह सागर, पीछोला झील सहित सहेलियों की बाड़ी) चित्तौड़गढ़ दुर्ग, कुम्भलगढ़ दुर्ग, सांवरियाजी, एकलिंगजी, नाथद्वारा – कांकरोली मन्दिर आदि महत्वपूर्ण स्थल हैं।
स्वयं द्वारा किये सर्वे के अनुसार चित्तौड़गढ़ के समीप बस्सी वाइल्ड लाइफ सेंचुरी, हम्मीरगढ़ इको–पार्क, सीतामाता वाइल्ड लाइफ सेंचुरी भी भौगोलिक पर्यटन दृष्टिकोण से मौलिक महत्ता रखते हैं, सीतामाता की उड़न गिलहरिया तो सुप्रसिद्ध हैं। सीतामाता वन्य अभयारण्य का 12 बीघा में फैला हुआ बरगद भी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बिंदु है, साथ ही लव– कुश कुंड के जल में स्नान करने से इसके आयुर्वेदिक औषधियों से युक्त होने से चर्म रोगों के निराकरण के लिए भी ये उपयोगी हैं।

इसी प्रकार हम्मीरगढ़ ईकोपार्क में पर्यटकों के लिए रात्रि विश्राम की सुविधा भी उपलब्ध है। रात्रि विश्राम हेतु विशाल आकृति के स्विस टेन्ट यहाँ लगाए गए हैं जो कि रसोई घर और लैट – बाथ की सुविधाओं से युक्त हैं। ये टेन्ट न्यूनतम दर पर पर्यटकों को उपलब्ध कराए जाते हैं। पूर्णिमा की रात को रात्रिचर जीवों के दर्शन हेतु सर्वाधिक आदर्श मौका होता है इसीलिए पर्यटकों द्वारा प्रायरू पूर्णिमा की रात के लिए ही स्विस टेन्ट बुक कराए जाते हैं। सीतामाता –बस्सी वन्यजीव अभ्यारण्य, हमीरगढ़ ईकोपार्क शहरी चकाचौंध से दूर एक शांत और सुरम्य वातावरण में स्थित है। ये विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों और वन्यजीवों के आश्रय स्थल है। जैव–विविधता की दृष्टि से ये संवेदनशील क्षेत्र है। ये जिले की महत्त्वपूर्ण जैव विविधता युक्त ईको पर्यटन साइट है। पर्यटकों की आवाजाही को बढ़ाने हेतु इसके प्रबंधन व प्रचार–प्रसार को सही दिशा व मंच प्रदान किए जाने की आवश्यकता है। पर्यटन विभाग, राजस्थान सरकार तथा पर्यटन से जुड़ी संस्थाओं जैसे RTDC (Rajasthan Tourism Development Corporation) a RITTMAN (Rajasthan Institute of Tourism and Travel Management) आदि के सहयोग से इसे राज्य व राष्ट्र स्तरीय पहचान प्राप्त हो रही है। स्थानीय स्तर पर भी बिजयपुर, बस्सी के हेरिटेज होटल भी अपने निजी प्रबन्धन से पर्यटकों को इस क्षेत्र के भौगोलिक पर्यटन स्थलों की ओर आकर्षित कर रहे हैं।

संस्कृति और पर्यटन महत्व:
मेवाड़ की संस्कृति राजस्थानी लोकगीतों, नृत्यों, वेशभूषा, लोककला और पारंपरिक हस्तशिल्प में झलकती है। यहाँ के मेवाड़ी लोग अपनी अतिथि–सत्कार की परंपरा के लिए प्रसिद्ध हैं कृ "पधारो म्हारे देश" उनका जीवन मंत्र है। पर्यटन की दृष्टि से मेवाड़ न केवल राजस्थान बल्कि पूरे भारत का महत्वपूर्ण केंद्र है। यहाँ के ऐतिहासिक किले, झीलें, मंदिर, और त्योहार पर्यटकों को भारत की प्राचीन सभ्यता और वीर परंपरा से जोड़ते हैं।

निष्कर्षत:
मेवाड़ राज्य भारतीय इतिहास का उज्ज्वल अध्याय है। यहाँ की भूमि ने वीरता, त्याग और संस्कृति की ऐसी मिसालें दी हैं, जो सदैव प्रेरणा देती रहेंगी। आज भी मेवाड़ अपनी ऐतिहासिक धरोहरों और प्राकृतिक सुंदरता के कारण भारत का गौरव बना हुआ है। मेवाड़ राज्य भारत की वीरता, संस्कृति और गौरव का प्रतीक है। इसकी प्राकृतिक सुंदरता और ऐतिहासिक स्मृतियाँ इसे भारत के सबसे आकर्षक पर्यटन स्थलों में एक बनाती हैं। मेवाड़ की गाथा हर भारतीय को अपने गौरवशाली अतीत की याद दिलाती है।

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487 editor@aijmr.com
Volume 2, Issue 2, March-April 2024
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2024.v02i02.1151

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. घनश्याम सिंह, वर्षा चुण्डावत, शिवपाल सिंह, मेवाड़ के देवगढ – मदरिया क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति एवं ठिकाना लसाणी के अभिलेख, हिमांशु प्रकाशन, उदयपुर, 2019ई.
2. गोरीशंकर हीराचंद ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग – 1, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2022ई.
3. के. डी. अर्सकिन, ए गजेटियर ऑफ दी उदयपुर स्टेट, स्कॉटिश मिशन इंडस्ट्रीज को लिमिटेड, 1908ई.
4. प्रियदर्शी ओझा, पश्चिमी भारत में जल प्रबंधन
5. ललित पाण्डेय, मेदपाट का पुरातात्विक इतिहास
6. कविराज श्यामलदास, वीर विनोद मेवाड़ का इतिहास, भाग प्रथम, महाराणा मेवाड़ हिस्टोरिकल पब्लिकेशन ट्रस्ट एवं राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर, 2017 ई.
7. तेज सिंह तरुण, बिजौलियां का इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2012ई.
8. अनुवादक रामनारायण दुगड़, संपादक गौरीशंकर हीराचंद ओझा, मुँहणोत नैणसी री ख्यात भाग– 1, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर
9. देवीलाल पालीवाल, पानरवा का सोलंकी राजवंश, जनक प्रकाशन उदयपुर, 2000ई.
10. हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत, बाठेड़ा (मेवाड़) के सारंगदेवोतों का राजनीतिक इतिहास, मेवाड़ श्री प्रकाशन, चित्तौड़गढ़ एवं नई दिल्ली, 2021
11. धायभाई तुलसीनाथ सिंह, शिकारी और शिकार (मेवाड़ संग्रहालय, मेवाड़ विश्वविद्यालय में संग्रहित)
12. जे. के. ओझा, मेवाड़ के पुरातात्विक स्मारक
13. मधु अग्रवाल, सी.पी. अग्रवाल, सांस्कृतिक पर्यटन से धरोहर का संरक्षण एवं संवर्धन, हिमांशु पब्लिकेशन, उदयपुर व नई दिल्ली, 2017
14. साक्षात्कार राजीव जी शर्मा, उम्र 53 वर्ष निवासो बांसी, रोहित जी चौबीसा, उम्र 26 वर्ष, निवासी बांसी